

लेखांकन की अवधारणा

- **व्यावसायिक इकाई संकल्पना** : मालिक और व्यवसाय दो अलग-अलग संस्थाएं हैं।
- **मुद्रा मापन की संकल्पना** : केवल मौद्रिक लेनदेन दर्ज किए जाते हैं।
- **निरंतरता की संकल्पना** : निकट भविष्य के लिए व्यापार जारी रहेगा।
- **संगतता की संकल्पना** : प्रत्येक वर्ष एक जैसी लेखांकन विधियों का प्रयोग।
- **उपार्जन संकल्पना (आगम मान्यता संकल्पना)** : किसी लेन देन को तब दर्ज किया जाता है जब वह किया गया है, ना कि तब, जब उसका भुगतान किया गया है।
- **लेखांकन अवधि** : 1 वर्ष = 1 लेखा अवधि = 1 वित्तीय वर्ष।
- **पूर्ण प्रस्तुतीकरण संकल्पना** : निर्णय लेने के लिए सभी सूचनाओं का पूरी तरह से खुलासा किया जाना चाहिए।
- **ऐतिहासिक लागत संकल्पना** : संपत्ति लागत पर दर्ज की जाती है।
- **आगम व्यय मिलान संकल्पना** : वर्तमान वर्ष के व्यय का मिलान वर्तमान वर्ष की अवधि के राजस्व के साथ किया जाता है।
- **द्विपक्षीय संकल्पना** : प्रत्येक लेनदेन दो खातों को प्रभावित करता है।
- **वस्तुनिष्ठता** : प्रत्येक लेन देन को सहायक दस्तावेज द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए।
- **सारता की संकल्पना** : लेखांकन को सारपूर्ण तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो आय के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण हैं, दूसरों को अनदेखा किया जाना चाहिए।
- **रूढ़िवादिता/विवेकशीलता की संकल्पना** : लाभों को तभी दर्ज किया जाये जब वे प्राप्त हो जाए जबकि दूरस्थ हानियों के लिए भी प्रावधान होना चाहिए।

लेखांकन के उपकरण (Tools of Accounting)

- **वित्तीय लेखांकन** :
 - एक व्यावसायिक संगठन के वित्तीय परिणाम उत्पन्न करने के लिए उपयोग की जाने वाली व्यवस्थित प्रक्रिया।
 - एक इकाई के सभी वित्तीय लेनदेन के परिणाम को बैलेंस शीट, लाभ और हानि के विवरण और नकदी प्रवाह के विवरण के रूप में सारांशित और दर्ज किया जाता है।
- **लागत लेखांकन** :
 - प्रत्येक व्यवसाय के लिए, निर्मित उत्पाद से संबंधित लागत का निर्धारण करना बहुत महत्वपूर्ण है और लागत लेखांकन व्यवसायों को लागत निर्णय लेने में मदद करता है।
 - उत्पादित परिणामों का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जा सकता है कि किसी उत्पाद की लागत क्या होनी चाहिए।
- **प्रबंध लेखांकन** :
 - इसमें प्रस्तुत सूचनाएँ प्रबंधक वर्ग को दी जाती है ताकि वे संस्था के हित में निर्णय ले सकें।

लेखांकन के उपयोग:

- करों का अनुमान लगाना
- व्ययों पर नियंत्रण करना
- छल-कपट पर नियंत्रण करना
- लेनदारों तथा देनदारों की स्थिति से अवगत करना
- क्रय-विक्रय तथा शेष माल की जानकारी
- व्यापार का सही-सही मूल्यांकन करना